

शिकारीय माकड़ी मास
मृगच्छादि मृग म

पत्तावली पेना हुई। आधिव्रता ज्यों मम ज्यों
अनुपाख्यत। शक-रुम कर तीन-बार आवाने
दिलवारी गई। खमल खोल उपम हो चुका है। कल
ज्यों मम आधिव्रता ज्यों के अनुपाख्यत रहे
पर ज्यों का ज्यों पर उपम दायरी। अमम
पैवनी मे खारिप किया जाता है। पत्तावली फिलत
शुमार हीकर खमल से कम ही।

मिगलि खले दीवाना सुगला मम।

